प्रस्तावना

भारतीय परंपरा में पहले संयुक्त परिवार का चलन था। सामाजिक स्तर पर संयुक्त परिवार की बड़ी ही अहम भूमिका थी, जिसका मुखिया परिवार का बुज़ुर्ग व्यक्ति होता था। वह अपने परिपक्व अनुभवों की दृष्टि से पूरे परिवार का संचालन करता था। तब पूरे परिवार में बुज़ुर्ग की एक खास अहमियत होती थी। लेकिन जैसे-जैसे समय बदलता गया और जीवन-जगत में भौतिकतावाद हावी होता गया, वैसे-वैसे संयुक्त परिवार टूटते गए और उनकी जगह एकल परिवार बढ़ते गए। इसके साथ ही परिवारों में बड़े-बुज़ुर्गों की वह अहमियत भी ख़त्म होती गई। ज़ाहिर है इससे बुजुर्गों की ज़िंदगी में तमाम तरह की परेशानियां आने लगीं। भूमंडलीकरण के बाद उपजी परिस्थितियों के चलते पारिवारिक और सामाजिक मूल्य बिखरने लगे। सूचना-क्रान्ति के उपरांत आई आधुनिकता की आंधी ने परिवार और समाज को खासा प्रभावित किया। कभी परिवार के केंद्र में रहनेवाला बुज़ुर्ग अब हाशिए पर और हाशिए से बाहर तक आ गया। मतलब उपभोक्तावादी संस्कृति से उपजी सारी विसंगतियों के 'साइड इफैक्ट' वृद्धों को भी झेलने पड़े।उनके लिए सम्मान की भावना लोगों में समाप्त होने लगी और अपने घर में ही बुजुर्गों की उपेक्षा होने लगी। इस प्रभाव की असल मार मध्य वर्ग के वृद्ध पर पड़ती है, जिसकी मानसिकता अपनी परिस्थितियों के चलते पहले से ही दबी हुई है। ऐसे बुजुर्गों को अब आए दिन यही सुनना पड़ता है कि- 'यहाँ क्यों बैठे हो?' 'इतनी ज़ोर-ज़ोर से खाँस क्यों रहे हो?' 'बार-बार पानी क्यों माँगते हो? कभी चुप भी बैठ सकते हो? या फिर 'हमेशा' चीखते ही रहते हो'' इत्यादि।

हर शोध की अपनी एक सीमा होती है, प्रस्तुत शोध में भी सन 2000 से 2012 के बीच छपी 13 प्रमुख कहानियाँ चयनित की गईं हैं। ये कहानियाँ हैं- कमलेश्वर की 'देवा की माँ', उदय प्रकाश की 'छप्पन तोले की

करधन', एस.आर. हरनोट की 'बिल्लियाँ बतियाती हैं', जोगिन्दर पाल की 'दादियाँ', प्रियंवद की 'पलंग', अवधेश प्रीत की 'अन्यथा', ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'अम्मा', कुलबीर सिंह मलिक की 'सरजू बुड्ढा', स्वाति तिवारी की 'वैतरणी के पार', नीलाक्षी सिंह की 'रंगमहल में नाची राधा' , मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'प्रेतकामना', कैलाश वानखेड़े की 'घंटी' और विमल चंद्र पाण्डेय की 'चशमें'। इन सभी कहानियों में वृद्ध पात्रों की अलग-अलग विविध छवियाँ और उनके कार्यकलाप को देखा जाएगा।

प्राक्कल्पना

चयनित कहानियों के माध्यम से समाज में बुज़ुर्गों की स्थिति पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाएगा । इस लघु शोध में कहानियों में बुज़ुर्गों का स्थान,स्त्री वृद्ध व पुरुष वृद्ध का जीवन संघर्ष,उनकी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक,मनोवैज्ञानिक समस्याओं और उनके कारणों को सबके सामने प्रस्तुत किया जाएगा, की किन कारणाओं से परिवार व समाज में उनकी उपेक्षा हो रही है ,यह भी देखा जाएगा की भूमंडलीकरण के पश्चात शहरीकरण,निजीकरण व विदेशी कंपनियाँ के आने से बुज़ुर्ग वर्ग किस प्रकार प्रभावित हुआ है ।

सीमाएँ और संभावनाएँ

एम.फिल पाठ्यक्रम को देखते हुए लघु शोध -प्रबंध को एक सीमा में ही रखा गया है। विषय के अनुसार शोध में सन २०००-२०१२ तक की केवल १३ कहानियों का चुनाव किया गया है।यह समसामयिक परिस्थितियों पर आधारित है कहानियों के बुज़ुर्ग पात्रों के जीवन में भूमंडलीकरण और उसके साथ ही उदारीकरण के बाद उत्पन्न हुई परिस्थितियों के प्रभाव के अध्ययन पर आधारित है। साहित्य में बुजुर्गों को लेकर बहुत कम लिखा गया है । कथा - साहित्य में बुज़ुर्ग पात्रों को लेकर और भी विस्तृत कार्य किया जा सकता है।

उद्देश्य

सन २०००-२०१२ के बीच की हिंदी कहानी के माध्यम से समाज में बुजुर्गों की उपेक्षा का कारण ढूँढना है। लिंग व अर्थ के आधार पर वृद्ध के जीवन संघर्ष की तुलना करते हुए उनकी पारिवारिक,सामाजिक , आर्थिक, मनोवैज्ञानिक समस्याएँ पर विचार करते हुए उनके कारण ढूँढना है।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित लघु- शोध विषय की प्रकृति विश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक , तुलनात्मक,मनोवैज्ञानिक है।चयनित कहानियों की चर्चा करते हुए विश्लेषणात्मक व व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। इसमें बुज़ुर्ग स्त्री-पुरुष के जीवन संघर्षों की तुलना होगी और अर्थ के आधार पर उच्च ,मध्य, निम्न वर्ग की बुजुर्ग सी स्थित पर प्रकाश डाला जाएगा। परिवार व समाज में बुज़ुर्गों की उपेक्षा को देखते हुए उनका मनोवैज्ञानिक अध्ययन भी किया जाएगा ।

संभावित अध्यायीकरण

प्रस्तावना

पहला अध्याय : हिंदी कहानी और बुज़ुर्ग पात्र

दूसरा अध्याय : चयनित कहानियों में बुज़ुर्ग पत्रों का वर्गीकरण

- लिंग के आधार पर वर्गीकरण
- अर्थ के आधार पर वर्गीकरण

तीसरा अध्याय : चयनित कहानियों में बुज़ुर्ग पत्रों की समस्याएँ

- पारिवारिक समस्याएँ
- सामाजिक समस्याएँ
- आर्थिक समस्याएँ
- मनोवैज्ञानिक समस्याएँ

उपसंहार

आधार ग्रंथ सूची

- कमलेश्वर - देवा की माँ, देस-परदेस, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली-2005
- कुलश्रेष्ठ. मनीषा - प्रेतकामना, कठपुतलियाँ
- तिवारी. स्वाति - वैतरणी के पार, अकेले होते लोग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2006
- प्रकाश. उदय - छप्पन तोले का करधन, तिरीछ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-2006
- पाल. जोगिंदर - दादियाँ, जोगिंदर पाल: चुनी हुई कहानियाँ,
- पांडेय. विमल चंद्र - चश्मे, डर, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली-2009
- प्रियंवद - पलंग, हिन्दी समय से
- प्रीत. अवधेश - अन्यथा, हमज़मीन
- मालिक. कुलबीर सिंह - सरजू बुड्ढा, कब्रिस्तान की बेरियाँ
- वानखेडे. कैलाश - घंटी, बयान(पत्रिका), जुलाई-दिसम्बर, 2010
- वाल्मीकि. ओमप्रकाश - अम्मा, सलाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली-2000
- सिंह. नीलाक्षी - रंगमहल में नाची राधा, परिंदे का इंतज़ार सा कुछ,
- हरनोट. एस.आर.- बिल्लियाँ बतियाती हैं, दारोश तथा अन्य कहानियाँ, आधार प्रकाशन-2012

संदर्भ ग्रंथ सूची

- लाल. विमला - वृद्धावस्था का सच, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली-2010
- शर्मा. प्रभुदत्त - सत्तर के पार एक दूसरा संसार, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर-2011
- प्रेमचंद - प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 2009
- फ्रायड. सिगमंड - मनोविश्लेषण, अनुवाद - देवेन्द्र कुमार, राजपाल एंड संज़, दिल्ली-2007
- भण्डारी. मन्नू -सम्पूर्ण कहानियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
- ज्ञानरंजन - सपना नहीं, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली-1977

पत्रिकाएँ

- सागर.शैलेन्द्र, कथा क्रम, विशेषांक-साठ से पार का जीवन और साहित्य, जनवरी-मार्च, 2010
- नागर. विष्णु - शुक्रवार, नोएडा, मार्च 14, 2013
- पुरी. अरुण - इंडिया टुडे, मार्च 06, 2013